परिकथा

समय और समाज की परिक्रमा

ISSN : 2320–1274

वेब अंक
www.notnul.com

मई-जून, जुलाई-अगस्त, 2024

मूल्य : 100 रुपये

अंक
105

अब 'परिकथा' का हर अंक एक विशेषांक

पाठक, लेखक, शुभचिंतक, विक्रय केन्द्र/एजेंट

हम सीमित साधनों के बावजूद 'परिकथा' को नियमित रूप से निकालते रहने की योजना पर काम कर रहे हैं।

- विक्रय केंद्र/एजेंट मित्रों से अनुरोध है कि वे 'परिकथा' के भुगतान को अद्यतन बनाये रखें। हमारी हमेशा से कार्यनीति है कि हम भुगतान पाने के लिए पीछे नहीं लगे रहें। हम इस विश्वास के साथ काम करते हैं कि विक्रय केंद्र/एजेंट स्वयं भुगतान कर देंगे और सम्बंधों को सम्मानजनक और मर्यादापूर्ण बनाये रखेंगे।
- पाठक, लेखक या शुभचिंतक अपने सम्पर्क से यदि 'परिकथा' को कोई विज्ञापन दिला सकते हैं तो वे यह सहयोग करें।
- जिनके लिए संभव हो और जिन्हें असुविधा नहीं हो रही हो, वे 'परिकथा' की सौजन्य सदस्यता लेकर सहयोग करें।
- जो शुभचिंतक 'परिकथा' के हर अंक के लिए सहयोग देना चाहते हैं, वे यह सहयोग 'परिकथा' को दें। हम उनके सहयोग के प्रति आभार की भावना रखते हुए 'संयोजन/आभार' के अंतर्गत उनका नाम सम्मान के साथ सम्पादकों के साथ शामिल रखेंगे।
- 'परिकथा' लेखकों का सामूहिक उपक्रम है। इससे जुड़े लेखक मित्र अवैतनिक सेवाएँ देते हैं।

आप जुड़ेंगे, हम तभी बढ़ेंगे

• सभी संपादक

वेब अंक
www.notnul.co

परिकथा

समय और समाज की परिक्रमा

वर्ष 19 अंक 105, **मई-जून, जुलाई-अगस्त, 2024**

रेखांकन:
सुषमा सिन्हा

संपादक
शंकर

संपादक-मंडल
डॉ. अब्दुल बिस्मिल्लाह
हरियश राय
महेश दर्पण

सौजन्य-सपादक
अरुण कुमार
अशोक शाह

सम्पादकीय पता
102, बुडबरी टावर
चार्मवुड विलेज
सूरजकुंड रोड, फरीदाबाद-121009

प्रकाशन-कार्यालय
अनुज्ञा बुक्स
1/10206, लेन 1ई,
वेस्ट गोरख पार्क, शाहदरा
दिल्ली-110032

दूरभाष
सम्पादकीय/ व्यवस्थापकीय 09431336275
08826011824
कार्यालय (0129) 4116726
09555670600

email : parikatha.hindi@gmail.com

संयुक्त संपादक
अरविंद कुमार सिंह

संपादन-सहयोगी
अजय मेहताब
रवि कुमार

कला : जयंत
कानूनी सलाह : उत्कर्ष

क्षेत्रीय समन्वयक
अवधेश द्विवेदी

संपादकीय
गाजा के बच्चे 3

देशांतर-1
फिलिस्तीनी कवि महमूद दरवेश की कविताएँ अनु.: अब्दुल बिस्मिल्लाह 5

देशांतर-2
जैतून आदित्य अभिनव 8

प्रसंग
जीवन क्या जिया शिवचंद प्रसाद 14

लेख
वैज्ञानिक दृष्टि के मायने और तकाज़े डॉ. व्रजकुमार पांडेय 18

लेख
भारतीय समाज की संरचना : अंतर्विरोधों की शिनाख्त अरुण कुमार 24

लेख
नई सदी का सिनेमा डॉ. विजय शर्मा 30

परिदृश्य
हाल-फिलहाल के उपन्यास
- विभूति नारायण राय से उमाशंकर चौधरी की बातचीत 37
- नवीन जोशी से सौरभ श्रीवास्तव की बातचीत 40
- हरियश राय से अशोक तिवारी की बातचीत 46
- महेश दर्पण से हीरालाल नागर की बातचीत 51
- प्रज्ञा से अवधेश प्रीत की बातचीत 55
- अंजू शर्मा से आकांक्षा पारे की बातचीत 61
- 'पंखुड़ी-पंखुड़ी प्रेम' डॉ. रितु होता 65

शब्द-चित्र
स्मार्ट अफसर अशोक शाह 69

लेख
कथेतर गद्य का वैभव हरियश राय 74

चौपाल
मूर्ति नर्मदेश्वर 88

'परिकथा' के सदस्यों तक पत्रिका नहीं पहुँच पाने की शिकायतों के बीच यह निर्णय लिया गया है कि 'परिकथा' अब सामान्य डाक से नहीं सिर्फ रजिस्टर्ड डाक से भेजी जायेगी। सदस्यता शूल्क निम्नवत होगी :

दस अंकीय सदस्यता	1000/-
डाक खर्च	500/-
पाँच अंकीय सदस्यता	500/-
डाक खर्च	250/-

इस अंक का मूल्य : 100

पत्रिका आजीवन निशुल्क पाने के लिए सौजन्य सदस्यता : 10,000 रुपये

सभी भुगतान चेक या ड्राफ्ट से या फिर सीधे 'परिकथा' एकाउंट में हो :

PARIKATHA
Aèkc No. : 50200010771980
Charmwood Village, Surajkund Road
Faridabad-121009
RTGS èk NEFT èk IFSC : HDFC 0000396

संपादक, सहायक संपादक अवैतनिक, अव्यवसायिक रूप से मात्र साहित्यिक-सांस्कृतिक कर्म में सहयोगी।

रमाशंकर प्रसाद द्वारा अनुज्ञा बुक्स, 1/10206, लेन 1ई, वेस्ट गोरख पार्क, शाहदरा, दिल्ली-110032 से डॉलफिन प्रिन्टो ग्राफिक्स, 4-ई/7, पाबला बिल्डिंग, झण्डेवालान एक्सटेंशन, नई दिल्ली-110055 से मुद्रित कराकर प्रकाशित।

'परिकथा' में प्रकाशित रचनाओं में विचार लेखकों के अपने हैं।

कहानियाँ

वैतरणी	सुरेश कांटक	92
छोटी मछली	तरसेम गुजराल	96
अंतिम नमन	सुषमा मुनीन्द्र	101
असफल प्रेम के नीड़ में पलते परिंदे का कोई घर नहीं होता	पूनम सिंह	106
टाइम-आउट	पवन माथुर	111
शुद्धिकर्म	उर्मिला आचार्य	115
सिगड़ी	देवांशु	120
साहेब का शोशा	धनेशदत्त पाण्डेय	123
स्मार्ट सब्जी बाजार	विजय गौड़	128
फील्ड मार्शल	अ.ख्तर आज़ाद	134
शिला-पट्ट	रविशंकर सिंह	139
अनुकंपा	कमलकांत लाल	142

नयी सदी : नयी कलम-2

शाम का स्वप्न और सहर का रास्ता	नीलाभ कुमार	149
मनुष्य के सुंदरतम को बचाए रखने की कोशिश करती कहानियाँ	राकेश कुमार	154
स्थानीय रंगों को चीह्नती कहानियाँ	डॉ. निशा तिवारी	161
आत्मनिष्ठ और वस्तुनिष्ठ अनुभवों का आख्यान	प्रांजल धर	169
सीमान्तों और परिधि का जनजीवन	प्रकाश कान्त	175
समाज के साथ कदम से कदम मिलाकर चल रहीं कहानियाँ	विजय शर्मा	179
मार्टिन जॉन की कहानियों में बदलते सामाजिक परिदृश्य	डॉ. कुमारी उर्वशी	183
रचनाधर्मी कहानियों के कथाकार मार्टिन जॉन	डॉ. मृत्युंजय सिंह	187
संभावनाओं से भरपूर कहानियाँ	अरुण होता	189
अंधकार में उम्मीद की किरण के कथाकार	डॉ. रवि कुमार	194
विश्व के परिदृश्य को समेटती हुई कहानियों का कथाकार	अवधकिशोर प्रसाद	198

कृतित्व

सुभाष राय के काव्य की भावभूमि और भाषा	डॉ. राम बचन यादव	202

कविताएँ

हजार तरीके	डॉ. चंद्रेश्वर	207
सलाम	सुधांशु कुमार मालवीय	209
भागलपुर	विनय सौरभ	212
वे कविता, छत और दरवाजे सब बनाने से चूक जाती हैं	अनामिका अनु	214
कहानी	डॉ. किरण	215
परिस्थितियाँ	वंदना पराशर	216
अनखुले पैकेट सा दिन	दिनेश अग्रवाल	217
प्रतीक्षा	जितेन्द्र जलज	219
स्त्रियों को सर्दी नहीं लगती	तृषान्निता	220
हवाओं के कंधों पर पत्तियाँ	बिर्जीस आरजू	221
कुल्हाड़ी	दीपक गोस्वामी	222
ईश्वर पर छोड़ दो	दिव्या श्री	223
सूरज	आंशी अग्निहोत्री	224

परिक्रमा

225

आवरण-चित्रकार : बंसीलाल परमार, गायत्री मंदिर के पास सुवासरा-458888, मो.: 9926494975
भीतरी रेखांकन : जयंत, गोविन्द सेन, लोकेश और इंदु
कम्प्यूटर सच्चा : **जोशी टाइपसेटर**, म.नं. 31, गली नं. 37-बी, कौशिक इन्क्लेव, बुराड़ी-110084 मो.: 9650463001

सम्पादकीय

गाजा के बच्चे

9 अप्रैल, 2024 को सलाम टी.वी. पर गाजा पर एक रिर्पोट प्रदर्शित-प्रसारित हुई जो निश्चित रूप से गाजा पर दिखायी गयी बहुत सारी रिर्पोटों की तरह ही पीड़ादायक और बेचैन करने वाली थी।

इस रिर्पोट में एंकर के दो वाक्य किसी को भी भीतर से हिला देने वाले थे :

'जिस समय यहाँ ईद के मौके पर बच्चों के लिए कपड़ों की खरीदारी होती थी, वहाँ आज उनके लिए कफन की खरीदारी हो रही है।'

❑

'गाजा में हर दिन बच्चों की मौत हो रही है और जो बच्चे घायल हो रहे हैं, वे तो घायल हैं ही और वे जिंदगी और मौत से जूझ रहे हैं।'

यहाँ हमें लब्धप्रतिष्ठ कथाकार असगर वजाहत की कहानी 'सबसे मुश्किल काम' याद आ रही है जिसमें पेशेवर अपराधी यह बातचीत करते हुए दिखायी पड़ रहे हैं कि दुनिया में सबसे मुश्किल काम है बच्चों का कत्ल करना। जाहिर है, यहाँ इस निष्कर्ष तक पहुँचने की स्थिति है कि गाजा पर हमला करने वाले पेशेवर अपराधियों से भी ज्यादा अमानवीय और क्रूर हैं।

हर पक्ष के अपने-अपने तर्क होते हैं। इजरायल का तर्क हो सकता है कि सबसे पहले हमास ने उस पर हमला किया। फिलिस्तीन के पास अपने इतिहास के तर्क हैं। दूसरे विश्वयुद्ध के बाद अमेरिका, ब्रिटेन और फ्रांस ने यहूदी आबादी को एक देश के रूप में पुनर्वासित करना चाहा था और इसके लिए वही भूमि चुनी जिसे फिलिस्तीनी अपनी मानते रहे हैं। जाहिर है, फिलिस्तीनियों ने इजरायल के अस्तित्व को कभी मन से स्वीकार नहीं किया और इसके विरुद्ध हमेशा संघर्ष किया। इस आंदोलन का नेतृत्व शुरुआत में एक लम्बे समय तक यासार आराफात ने किया था। उसके बाद समय-समय पर हमेशा छोटी-बड़ी झड़पें होती रही हैं। एक पक्ष यह भी है कि इजरायल हमेशा से अमेरिका, फ्रांस, ब्रिटेन के समर्थन के बल पर एक ठसक में रहा है जो फिलिस्तीनियों को चुभती रही है। यदि इजरायल ने अपने अस्तित्व के बाद से फिलिस्तीनियों के लिए उनके प्रति सौहार्द्रपूर्ण बिरादराना मेलजोल के रूख का प्रदर्शन किया होता तो संभव था, उसे फिलिस्तीनियों का सहयोग और समर्थन मिल चुका होता, फिलीस्तीनी उसे दिल से अपना चुके होते और दोनों अच्छे पड़ोसी की तरह रह रहे होते और तनाव की स्थितियाँ बनी ही नहीं होतीं।

पहले के युद्ध सिर्फ सैनिकों के बीच लड़े जाते थे। आज युद्ध के लपेटे में पूरा समाज आ जाता है। आज युद्ध में एक नैतिकता यह निभायी जाती है कि हमले सिर्फ सैन्य ठिकानों,